ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए विशेष पुरुषार्थ

1 जनवरी : समय प्रमाण तीन शब्द सदा याद रखो – अन्तर्मुख, अव्यक्त और अलौकिक। अभी तक कुछ लौकिकपन मिक्स है लेकिन जब बिल्कुल अलौकिक अन्तर्मुखी बन जायेंगे तो व्यक्त फरिश्ते नज़र आयेंगे। रूहानी वा अलौकिक स्थिति में रहने के लिए अन्तर्मुखी बनो।

2 जनवरी : अन्तर्मुख स्थिति द्वारा हर एक के दिल के राज़ को जानकर उन्हें राज़ी करो। इसके लिए साधारण रूप में असाधारण स्थिति का अनुभव स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। बाहरमुखता में आने समय अन्तर्मुखता की स्थिति को भी साथ-साथ रखो।

3 जनवरी : अन्तर्मुख स्थिति में रहकर फिर बाहरमुखता में आना, इस अभ्यास के लिए अपने ऊपर व्यक्तिगत अटेन्शन रखने की आवश्यकता है। जब आप अन्तर्मुख स्थिति में रहेंगे तो बाहरमुखता की बातें डिस्टर्ब नहीं करेंगी क्योंकि देह-अभिमान से गैर हाज़िर रहेंगे।

4 जनवरी : सेवा का प्रत्यक्षफल दिखाने के लिए जैसे ब्रह्मा बाप ने अपनी रूहानी स्थिति द्वारा सेवा की, ऐसे आप बच्चे भी अब अपनी रूहानी स्थिति को प्रत्यक्ष करो। रूह आत्मा को भी कहते हैं और रूह इसेन्स को भी कहते हैं। तो रूहानी स्थिति में रहने से दोनों ही हो जायेंगे। दिव्य गुणों की आकर्षण अर्थात् इसेन्स वह रूह भी होगा और आत्मिक स्वरूप भी दिखाई देगा।

5 जनवरी : लौकिक में अलौकिकता की स्मृति रहे। लौकिक में रहते हुए भी हम लोगों से न्यारे हैं। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेंगे, लेकिन जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे तो सबको प्यारे लगेंगे, इसे ही अलौकिक स्थिति कहा जाता है।

6. जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप साधारण रूप में होते असाधारण वा अलौकिक स्थिति में रहे। ऐसे फॉलो फादर। जैसे सितारों के संगठन में जो विशेष सितारे होते हैं उनकी चमक, झलक दूर से ही न्यारी और प्यारी लगती है। ऐसे आप सितारे भी असाधारण आत्माओं के बीच विशेष आत्मायें दिखाई दो।

7 जनवरी : ब्रह्मा बाप के समान आपके यह नयन रूहानियत का अनुभव करायें, चलन बाप के चरित्रों का साक्षात्कार कराये, मस्तक मस्तकमणी का साक्षात्कार कराये, यह अव्यक्ति सूरत दिव्य, अलौकिक स्थिति का प्रत्यक्ष रूप दिखाये। इसके लिए अपनी अन्तर्मुखी, अलौकिक वा रूहानी स्थिति में सदाकाल रहने का अभ्यास करो।

8 जनवरी : ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए कर्म करते बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप यह मन की एक्सरसाइज करो। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे, सेवा का भी बोझ नहीं रहा। ऐसे फॉलो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

9 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई, ऐसे फॉलो फादर करो। सदा देह भान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्थिति।

10 जनवरी : नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन अव्यक्त वतन में जाकर फिर परमधाम में चलना है इसलिए मन की एकाग्रता पर विशेष अटेन्शन दो, ऑर्डर से मन को चलाओ। हर बात में, वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो। फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ।

11 जनवरी : अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो कि मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ, चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन का अभ्यास करो। सेकेण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट रहो।

12 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप ने अनेक मेरे मेरे को एक मेरे में समा दिया। मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। ऐसे फॉलो फादर करो। इससे एकाग्रता की शक्ति बढ़ेगी। फिर जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना चाहो, जितना समय चाहो उतना और ऐसा मन एकाग्र हो जायेगा। इस एकाग्रता की शक्ति से स्वत: ही एकरस फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होगी।

13 जनवरी : ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनो। सदैव अपना लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे। अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं।

14 जनवरी : फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है भल सेवा का बन्धन है, लेकिन इतना फास्ट गति है जो जितना भी करे, उतना करते हुए भी सदा फ्री हैं, जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा। सदा ही स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव हो क्योंकि शरीर और कर्म के अधीन नहीं हैं।

15 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप ने बीज रूप स्टेज अर्थात् पॉवरफुल स्टेज का विशेष अभ्यास करके पूरे विश्व को सकाश दी। ऐसे फॉलो फादर करो क्योंकि यह स्टेज लाइट हाउस, माइट हाउस का कार्य करती है। जैसे बीज द्वारा स्वत: ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है, ऐसे जब बीजरूप स्टेज पर स्थित होंगे तो ऑटोमेटिकली विश्व को लाइट का पानी मिलेगा।

16 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहे। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई नहीं दिया। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह कोई भी शब्द बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल, दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बांध देंगे। ऐसे लवलीन स्थिति में रहो तो एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

17 जनवरी : ब्रह्मा बाप समान किसी भी बात के विस्तार में न जाकर, विस्तार को बिन्दी लगाए बिन्दी में समा दो, बिन्दी बन जाओ, बिन्दी लगा दो। बिन्दी में समा जाओ तो सारा विस्तार, सारी जाल सेकण्ड में समा जायेगी और समय बच जायेगा, मेहनत से छूट जायेंगे। बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे।

18 जनवरी : सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहो तो प्यार स्वरूप, मास्टर प्यार के सागर बन जायेंगे। प्यार करना नहीं पड़ेगा, प्यार का स्वरूप बन जायेंगे। सारा दिन प्यार की लहरें स्वत: ही उछलेंगी। जितना-जितना ज्ञान सूर्य की किरणें वा प्रकाश बढ़ता जायेगा उतना ही ज्यादा प्यार की लहरें उछलेंगी।

19 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप ने अपने सुख के साधनों का, आराम का, किसी भी बात का आधार नहीं रखा। वे सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन रहे, ऐसे फॉलो फादर करो। जैसे शमा ज्योति-स्वरूप, लाइट माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट-माईट रूप बनो।

20 जनवरी : जैसे ब्रह्मा बाप सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहे। ऐसे आपके ब्राह्मण जीवन का आधार परमात्म प्यार है। प्रभु प्यार ही आपकी प्रॉपर्टी है। यही प्यार ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ाता है, इसलिए सदा प्यार के सागर में लवलीन रहो।